# बहुसांस्कृतिक शिक्षण
# एक समावेशी दृष्टिकोण

गुरुप्रीत कौर*
एन.पी.एस. चन्देल**

*विद्यालयों में विविध सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी होते हैं। यह स्थिति केवल राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कक्षाओं में ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी दिखाई देती है। वर्तमान शिक्षा जगत के परिप्रेक्ष्य में बहुसंस्कृति आधारित विद्यार्थियों के समावेशन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अब बहुसांस्कृतिक विविधता आधारित विद्यार्थी को एक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि एक सुअवसर के रूप में देखा जा रहा है। बहुसांस्कृतिक विविधता संबंधी मूल्य के अधिकतम संपोषण के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा की अवधारणा का प्रादुर्भाव हुआ है और इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग के लिए शिक्षक व विद्यार्थी व्यवहार, शिक्षण विधियों एवं व्यूह रचनाओं का निर्माण आदि महत्वपूर्ण तत्व हैं। इस लेख में बहुसांस्कृतिक शिक्षण का प्रादुर्भाव, अंतर्निहित दर्शन, बहुसांस्कृतिक शिक्षण का औचित्य, शिक्षण संबंधित संभावित रणनीतियाँ, कक्षागत शिक्षक-विद्यार्थी व्यवहार आदि पर चर्चा की गई है।*

वर्तमान समय में, बहुसांस्कृतिक विविधता आधारित जनसंख्या का स्वरूप दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जो कि वैश्विक स्तर पर बहुसंस्कृतियों के समावेशन का सूचक है। पिछले कुछ दशकों में लगभग संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की संपूर्ण जनसंख्या में प्रजातिक अल्पसंख्यकों का प्रतिशत अत्यंत तीव्र गति से बढ़ा है। (यू.एस. सेंसस ब्यूरो 1980, 2010) अमेरिकी मूल निवासियों का प्रतिशत अत्यंत तीव्र गति से घटा है, सन् 1980 में 80 प्रतिशत गोरी जनसंख्या थी जो कि सन् 2010 में घटकर 69 प्रतिशत रह गई (पासेल और कोहेन)। यही स्थिति कमोवेश कई प्रजातांत्रिक विकासशील देशों में रही है और प्रवास की अधिकता के कारण जनसंख्या की संरचना में भी यह बदलाव आने लगे हैं।

इसी प्रकार अब विद्यालयों में भी बहुसांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी है। विद्यार्थियों की संख्या में इस प्रकार का परिवर्तन विकसित देशों में आरंभ से ही रहा है, परंतु विकासशील देशों में भी यह प्रवृत्ति बढ़ रही है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा व शिक्षण का प्रादुर्भाव अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन 1970 के तहत मिलता है, जिसका प्रभाव बीसवीं शताब्दी

**शोधार्थी*, शिक्षा संकाय, दयालबाग शिक्षण संस्थान, दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश 282005
***विभागाध्यक्ष* (पी. जी. एंड रिसर्च प्रोग्राम), शिक्षा संकाय, दयालबाग शिक्षण संस्थान, दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश 282005

© NCERT not to be republished

के प्रारंभिक कुछ दशकों तक तीव्र रूप से बना रहा है (बैंक्स और बैंक्स, 2004)। बहुसांस्कृतिक शिक्षा समावेशन का एक प्रारूप प्रस्तुत करती है जो मात्र एक संप्रत्यात्मक अवधारणा है, इसका वास्तविक अनुप्रयोग शिक्षण प्रक्रिया द्वारा ही संभव है। बहुसांस्कृतिक विविधता का समावेशन व्यक्ति के दृष्टिकोणों में परिवर्तन द्वारा ही संभव है जिसमें समावेशी भावना का विकास करना अत्यंत आवश्यक है।

## बहुसांस्कृतिक शिक्षण का प्रादुर्भाव व अंतर्निहित दर्शन

बहुसांस्कृतिक शिक्षण, बहुसांस्कृतिक शिक्षा का प्रकार्यात्मक प्रारूप है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा का प्रादुर्भाव अमेरिका जैसे विकसित देशों से हुआ है, जहाँ की कक्षाओं में अधिक विविधता विद्यमान है। इसका प्रमाण एक विद्यालय आधारित जनगणना रिपोर्ट से मिलता है। सन् 1970 के तहत, k–12 तक की कुल विद्यार्थी गणना में 78 प्रतिशत मूल अमरीकी विद्यार्थी तथा 22 प्रतिशत सांस्कृतिक विविधता आधारित विद्यार्थी पाए गए। इसके उपरांत 2007 के दौरान विद्यालयों में बहुसांस्कृतिक आधारित विद्यार्थियों का प्रतिशत बढ़कर 44 प्रतिशत हो गया और मूल अमेरिकी विद्यार्थियों का प्रतिशत घटकर 56 प्रतिशत पर आ गया (एन.सी.ई.एस., 2012) जो कि तीव्र बहुसांस्कृतिक बढ़ोतरी का सूचक है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा का इतिहास भले ही अमेरिका जैसे विकसित देश से मिलता है, परंतु इस सत्य को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि भारत एक ऐसा देश है जहाँ सदैव 'विविधता में एकता' जैसे विचार पर ज़ोर दिया जाता रहा है। इसके अतिरिक्त भारत एक ऐसा राष्ट्र है, जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर प्रवास के अतिरिक्त आतंरिक प्रवास अर्थात् एक राज्य से दूसरे राज्य में प्रवास की संख्या भी बहुत है। भारत में मौसमी प्रवास अधिक रहता है, इसमें भी अंतरराज्य प्रवास का प्रचलन सबसे अधिक रहता है। वर्ष 2001 की जनगणना से लेकर 2011 तक की जनगणना के मध्य अंतरराज्य जनसंख्या प्रवास का प्रतिशत दोगुना रहा है और 2011 से 2016 के बीच प्रतिवर्ष राज्यों के मध्य लगभग 90 लाख जनसंख्या का प्रवास रहा है (यूनेस्को 2018)। शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009 द्वारा स्थानीय अधिकारियों को विद्यालय में सभी प्रवासी या अन्य वंचित विद्यार्थियों को प्रवेश देने की अनुमति का प्रावधान किया गया है (यूनेस्को 2018)।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रत्यय द्वारा बहुसांस्कृतिक शिक्षण का प्रादुर्भाव हुआ है। यह कोई नवीन शिक्षण विचारधारा नहीं है, वरन् यह पूर्व प्रचलित अन्य शिक्षण दर्शन पर आधारित व उनका संकलित नवीन दर्शन है जिसमें समता शिक्षण (इक्विटी पेडागॉजी), विविधता शिक्षण (डाइवर्सिटी पेडागॉजी), संस्कृति संगत शिक्षण (कल्चरली रेलेवेंट पेडागॉजी), सामाजिक न्याय शिक्षण (सोशल जस्टिस पेडागॉजी) इत्यादि का संकलित शिक्षण दर्शन है।

## बहुसांस्कृतिक शिक्षण का औचित्य

बहुसंस्कृतियों के ज्ञान का अभाव व उनकी अवहेलना विद्यार्थियों के मध्य पारस्परिक विभेद, हीनता व शैक्षिक उपलब्धि के अंतर को उत्पन्न

© NCERT not to be republished

करता है। अनुसंधान के निष्कर्ष भी इस बात का साक्ष्य देते हैं कि शिक्षक की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है (अवविडरेज और वेनस्टेनए 1999)। यूनेस्को की (जी.ई.एम. 2019) रिपोर्ट, 'ग्लोबल एजुकेशन' में बताया गया कि अन्य देशों की भाँति भारत भी एक ऐसा देश है, जो प्रवासी विद्यार्थियों की शिक्षा की गारंटी को सुनिश्चित करता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण गठित आयोगों व संचालित भारतीय शैक्षिक नीतियों के प्रावधानों में देखने को मिलता है। सर्व शिक्षा अभियान (2001) के सार्वभौमिक शिक्षा के प्रावधान और शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 जिसमें 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान किया गया है, बहुसांस्कृतिक विविधता आधारित विद्यार्थियों के अधिकारों के संरक्षण की बात करता है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009 में, स्थानीय अधिकारियों को विद्यालय में सभी प्रवासी या अन्य वंचित विद्यार्थियों को प्रवेश देने की अनुमति का प्रावधान भी दिया गया है (यूनेस्को 2018)।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948) द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षण-अधिगम का माध्यम बनाने पर बल दिया गया है, क्योंकि भाषा को किसी भी संस्कृति के प्रस्तुतीकरण का सशक्त माध्यम और विचारों के प्रस्फुटन का आधार माना जा सकता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952) द्वारा शिक्षा का कार्य विद्यार्थियों को राष्ट्र की विविध संस्कृतियों को समझाना और उसके प्रति चेतना जाग्रत करना बताया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) की रिपोर्ट में एक ऐसी नवीन 'सामान्य विद्यालय प्रणाली' की व्यवस्था करने पर बल दिया गया है, जो विद्यालय को सांस्कृतिक बाधाओं से दूर कर सांस्कृतिक मूल्यों के समावेशन व संचालन करने पर बल दे। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986* में, देश के प्रत्येक भाग की बहुसंस्कृतियों को समझने और विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था में रहने वाले लोगों के प्रति विद्यार्थियों में समझ विकसित करने की बात कही गई है और साथ ही असांस्कृतिकरण, अमानवता व अलगाव की भावना को अस्वीकृत करने को महत्व प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त पुस्तकों का अनुवाद बहुभाषाओं में करने व बहुसांस्कृतिक शब्दकोशों का प्रकाशन करने का प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया गया है। इसके उपरांत संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1992) में सांस्कृतिक विरासत को विद्यालय पाठ्यचर्या में परिलक्षित करने का सुझाव प्रस्तुत किया गया और साथ में शिक्षा व संस्कृति को एकत्रित करने का विचार भी प्रस्तुत किया गया जिससे कि विद्यार्थी की अंतर्निहित क्षमताओं का यथासंभव उन्नयन हो सके।

वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में मुख्य धाराओं की कक्षाओं में सांस्कृतिक विविधता वाले विद्यार्थियों के समावेशन पर ध्यान दिया जा रहा है, जिसका वास्तविक प्रयोग शिक्षण प्रशिक्षण संचालित कार्यक्रम में संशोधन द्वारा संभवतः संभव हो सकता है। 'द करिकुलम फ्रेमवर्क फ़ॉर टीचर एजुकेशन (2009)' में, विद्यार्थियों के अनुरूप संस्कृति संगत शिक्षणशास्त्र का प्रयोग करने हेतु शिक्षक को सशक्त बनाने पर बल दिया गया है और केंद्रीय सलाहकार बोर्ड (2005) द्वारा सांस्कृतिक

© NCERT not to be republished

शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम से एकीकृत करने का विचार प्रस्तुत किया गया है जिससे कि विद्यालयी शिक्षा समुदाय की संस्कृति से अवगत हो सके। यह तथ्य भी अति महत्वपूर्ण है कि विविधता आधारित विद्यार्थी भी भारतीय शिक्षा का एक अंग है और भारत के पाठ्यक्रम में बहुसांस्कृतिक विविधता आधारित विद्यार्थियों के समावेशन हेतु पाठ्यक्रम के अंतर्गत 2005 तक कोई विशेष प्रावधान नहीं था, परंतु *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* द्वारा एक ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया जो मुख्यतः विद्यार्थी-केंद्रित हो, जिसमें विद्यार्थी तनावमुक्त, सृजनात्मक व आनंदित अधिगम अनुभव कर सकें। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* द्वारा पाठ्यक्रम के निर्माण में पाँच मुख्य सिद्धांतों को आधार बनाया गया, जिनमें से तीन सिद्धांत ऐसे हैं जो बहुसांस्कृतिक शिक्षण के संदर्भ में संगत प्रतीत होते हैं—

- ज्ञान को स्कूल से बाहर के जीवन से जोड़ना।
- पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन करना कि वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए बजाय इसके कि वह पाठ्यपुस्तक केंद्रित बनकर रह जाए।
- एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य-व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताएँ समाहित हों।

इसके अतिरिक्त *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* द्वारा ऐसे शैक्षिक उद्देश्यों को भी समृद्ध करने पर बल दिया गया है जो मानवीय मूल्यों से संबंधित हैं; यथा—

- लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता का वादा,
- अन्य व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता रखना,
- अधिगम हेतु सृजनात्मक एवं लचीले उपागम को अपनाना।

*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* व यूनेस्को (2019) द्वारा प्रस्तुत किए गए महत्वपूर्ण बिंदु बहुसांस्कृतिक शिक्षण की माँग को भारतीय कक्षागत वातावरण में संपोषित करने की भावना को और भी प्रबल बनाते हैं।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा व शिक्षण का क्षेत्र पिछले तीन दशकों से विद्यालयों व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का प्राथमिक क्षेत्र बन चुका है। द *कमीशन ऑन मल्टीकल्चरल एजुकेशन ऑफ़ द अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ कॉलेज फ़ॉर टीचर एजुकेशन* (ए.ए.सी.टी.ई.) ने अपनी विचारगोष्ठी के निष्कर्षों द्वारा तीन मुख्य बिंदु प्रस्तुत किए हैं —

- सांस्कृतिक विविधता एक मूल्यवान संसाधन है।
- बहुसांस्कृतिक शिक्षा, सांस्कृतिक विविधता को स्वीकृति प्रदान करती है।
- सांस्कृतिक अनेकता को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के प्रत्येक आयाम में खोजने व जोड़ने की आवश्यकता है (बैप्टिस्ट और बैप्टिस्ट, 1980)।

## बहुसांस्कृतिक शिक्षण

बहुसांस्कृतिक शिक्षण, एक शिक्षण प्रक्रिया है जो कि शैक्षिक संस्थानों को विभेदीकरण व दमन जैसी कुरीतियों से बचाता है और एक सुरक्षात्मक व उत्पादक वातावरण का निर्माण करने पर बल देता है। इसे परिभाषित करते हुए नीटो (2000) ने लिखा है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षण, एक नस्ल विरोधी, समानाधिकारवादी व समावेशी शिक्षण प्रक्रिया है जो कि समीक्षात्मक शिक्षण दर्शन की

© NCERT not to be republished

विचारधारा पर आधारित है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा एक विचारधारा तथा एक शैक्षिक आंदोलन है जिसका मुख्य उद्देश्य शैक्षिक संस्थानों की संरचना में परिवर्तन लाना है जिससे कि जेंडर विभेद, विशिष्ट विद्यार्थी, प्रजाति, नस्लवाद, भाषायी व सांस्कृतिक विविधता को समाप्त किया जा सके व विद्यालय में सभी विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि के समान सुअवसर प्रदान किए जा सकें (बैंक्स, 2004)। जे. ए. बैंक्स (1993) ने अपने शिक्षण संबंधित दर्शन को प्रस्तावित करते हुए बहुसांस्कृतिक शिक्षण के पाँच आयामों को प्रस्तुत किया है जिसमें विषय-वस्तु एकीकरण, ज्ञान की संरचना, पक्षपात की भावना को कम करना, समता आधारित शिक्षण को अपनाना व सामाजिक संरचना और विद्यालयी संस्कृति को सशक्त बनाने पर बल दिया गया है।

## बहुसांस्कृतिक शिक्षण की संभावित रणनीतियाँ

बैंक्स व बैंक्स (2010) द्वारा पाठ्यक्रम में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के समन्वय हेतु चार उपागम बताए हैं —

1. योगदानात्मक उपागम
2. परिवर्तनात्मक उपागम
3. योगात्मक उपागम
4. सामाजिक क्रिया उपागम

## बहुसांस्कृतिक शिक्षण को प्रोत्साहित करने के सामान्य उपाय

- कक्षा में सहयोगी अधिगम (कोऑपरेटिव लर्निंग) को बढ़ावा देना (कोहेन, 1994; स्लेविन, 1984)।
- ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सभी विद्यार्थियों को समान सुअवसर प्रदान करना।
- बहुसांस्कृतिक विविधता व समता संबंधित बिंदुओं पर विचार-विमर्श करने हेतु स्वतंत्र वातावरण प्रदान करना।
- शिक्षक को स्वयं भी विविध संस्कृतियों को जानने व उनका तुलनात्मक अध्ययन करने के प्रति इच्छुक होना।
- संस्कृति संगत उदाहरणों का शिक्षक द्वारा कक्षा में प्रयोग करने पर विशेष बल देना।
- विद्यार्थियों को ऐसे सुअवसर प्रदान करना जिससे वे विविध भाषा विशेष शब्दकोशों का प्रयोग कर सकें।
- विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त करना।
- विद्यार्थियों को यह प्रतीत कराना कि वह अपने समुदाय की संस्कृति विशेष का एक प्रतिनिधि सूचक हैं।
- विद्यार्थियों को अन्य संस्कृतियों व उनके मूल्यों के प्रति सम्मान करना सिखाना।

## बहुसांस्कृतिक शिक्षण हेतु विशिष्ट शिक्षण विधियाँ, उपागम व प्रतिमान

बहुसांस्कृतिक शिक्षण के लिए ऐसी शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए, जिनमें विद्यार्थियों को एक-दूसरे से अंतर्क्रिया करने के अधिकतम अवसर मिल सकें ताकि वे एक-दूसरे की संस्कृति से परिचित हो सकें। बहुसांस्कृतिक शिक्षण के लिए शिक्षक विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों, उपागमों एवं प्रतिमानों का उपयोग कर सकते हैं या इनमें से किसी एक या अधिक प्रतिमानों या व्यूह रचनाओं का भी प्रयोग कर सकते हैं, यथा—

© NCERT not to be republished

- प्रयोजन विधि, समस्या-समाधान विधि, नाट्य मंचन, रचनात्मक उपागम (कंस्ट्रक्टिव एप्रोच), सहयोगी अधिगम (कोऑपरेटिव लर्निंग), सहकारी अधिगम (कोलेबोरेटिव लर्निंग)।
- परिचर्चा विधियाँ— मस्तिष्क उद्वेलन (ब्रेन स्टॉर्मिंग), वाद-विवाद (डिबेट), संगोष्ठी (सेमिनार), समूह चर्चा (पैनल डिस्कशन), परिसंवाद (सिम्पोज़ियम), सम्मेलन (कॉन्फ्रेंस)।
- शिक्षण प्रतिमानों— साझेदारी अधिगम प्रतिमान (पार्टनर्स इन लर्निंग मॉडल), भूमिका निर्वहन प्रतिमान (रोल प्लेइंग मॉडल), वैयक्तिक विभिन्नता अनुकूलन प्रतिमान (इंडिविज़ुअल डिफ़रेंसेज), ज्यूरिस प्रुडेंशियल पूछताछ प्रतिमान (ज्यूरिस प्रुडेंशियल इनक्वायरी मॉडल)

## निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षण एक ऐसे कक्षागत वातावरण का निर्माण करने पर बल देता है जो बहुविविधता विशेषकर सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए ऐसी शिक्षण प्रयोजना का निर्माण करने पर बल देता है जिससे सभी विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि के समान सुअवसर मिल सकें। इस शिक्षण के अंतर्गत विद्यार्थियों की सांस्कृतिक विविधता को केंद्र में रखते हुए स्वतंत्र अधिगम वातावरण के निर्माण पर बल दिया जाता है। विद्यार्थी अपने परिवेश अनुकूल उदाहरणों द्वारा ज्ञान अर्जित करें और उसका प्रयोग अपने व्यावहारिक जीवन में कर सकें। विद्यार्थी कक्षा के अन्य

**बहुसांस्कृतिक शिक्षण के लिए कक्षागत परिस्थिति में शिक्षक एवं विद्यार्थी व्यवहार**

| कक्षागत शिक्षक व्यवहार | कक्षागत विद्यार्थी व्यवहार |
|---|---|
| बहुसांस्कृतिक विविधता आधारित विद्यार्थियों की पहचान करना | विद्यार्थियों द्वारा द्वैतवादी तार्किक क्षमता का निर्माण करना |
| प्रत्येक विद्यार्थी से अंतर्क्रिया करने का यथासंभव प्रयास करना | मुख्यधारा की संस्कृति में स्वयं को आत्मसात करने का प्रयास करना |
| संस्कृति सुरक्षात्मक कक्षागत वातावरण का निर्माण करने पर बल देना | कक्षागत सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने का प्रयास करना |
| विविध संस्कृति, समावेशी विषय व सहायक सामग्रियों के अधिकतम प्रयोग करने पर बल देना | स्वयं संचालित अधिगम को प्रोत्साहित करने का प्रयास करना |
| बहुसांस्कृतिक व्यूह रचनाओं के निर्माण व अनुप्रयोग के कौशलों को विकसित करना | अपने अनुकूल भाषा शैली द्वारा विषय-वस्तु अर्जित करने का प्रयास करना |
| बहुसांस्कृतिक चेतना के विकास के प्रति जिज्ञासु होना | अपनी तार्किक योग्यता के प्रयोग द्वारा अनुदेशन ग्रहण करना |
| कक्षा में बहुआयामी आकलन विधियों का प्रयोग करना | स्व-आकलन के गुण को विकसित करना |

© NCERT not to be republished

विद्यार्थियों के अनुकूल शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सक्षम हो सकें। शिक्षक के दृष्टिकोण से बहुसांस्कृतिक शिक्षण वह माध्यम है जो शिक्षक को अपने संस्कृतिकरण के पक्षपात से ऊपर उठकर प्रभावशाली ढंग से शिक्षण करने में मदद करता है एवं देश के लोकतांत्रिक मूल्यों, समानता, समता, समावेशन आदि को संवर्धित करने के सुअवसर भी प्रदान करता है।

## संदर्भ


अवविडरेज, जे., और आर. एस. वेनस्टेनए. 1999. अर्ली टीचर परसेप्शन एंड लेटर स्टूडेंट एकेडमिक अचीवमेंट. *जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी*. 91, पृष्ठ 731–746. संयुक्त राज्य अमेरिका.

कोहेन, ई. जी. 1994. *डिज़ाइनिंग ग्रुपवर्क— स्ट्रेटजीस फ़ॉर द हेट्रोजिनस क्लासरूम* (सेकंड एडिशन). टीचर कॉलेज प्रेस, न्यूयॉर्क.

ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट. 2019. *माइग्रेशन, डिस्प्लेसमेंट एंड एजुकेशन— बिल्डिंग ब्रिज्स*. नॉट वॉल्स यूनेस्को, पेरिस.

नीटो, एस. 2000. *अफ़र्मिंग डाइवर्सिटी— द सोशियोपॉलिटिकल कॉन्टेक्स्ट ऑफ़ मल्टीकल्चरल एजुकेशन* (थर्ड एडिशन). लॉन्गमैन प्रेस, न्यूयॉर्क.

नेशनल सेंटर फ़ॉर एजुकेशन स्टैटिस्टिक्स. 2006. *डाइजेस्ट ऑफ़ एजुकेशन स्टैटिस्टिक्स, 2005*. वाशिंगटन डी. सी., ऑथर.

———. 2012. *द कंडीशन ऑफ़ एजुकेशन, 2011*. वाशिंगटन डी. सी., ऑथर.

पासेल, जे. एस. और डी. कोहेन. 2008. *यू. एस. पॉपुलेशन प्रोजेक्शन— 2005–2050*. पीस रिसर्च सेंटर, वाशिंगटन डी. सी.

बैंक्स, जे. ए. 1993. इनटिग्रेटिंग दी करीकुलम विद इथनिक कॉन्टेक्स्ट— एप्रोचेस एंड गाइडलाइन. संपादन में जे. ए. बैंक्स और सी. एम. बैंक्स. *मल्टीकल्चरल एजुकेशन— इशूज़ एंड पर्सपेक्टिव*. पृष्ठ 3–28. अल्यन एंड बेकन, बोस्टन.

———. 1993. मल्टीकल्चरल एजुकेशन— हिस्टोरिकल डेवलपमेंट, डाइमेंशस एंड पैकेट्स. संपादन में एल. डी. हैमंड. *रिव्यू ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन*. पृष्ठ 3–49. अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च एसोसिएशन, वाशिंगटन, डी. सी.

———. 1994ब. *मल्टीएथनिक एजुकेशन— थियरी एंड प्रैक्टिस* (थर्ड एडिशन). अल्यन एंड बैकन, बोस्टन.

———. 2004. मल्टीकल्चरल एजुकेशन— हिस्टोरिकल डेवलपमेंट डाइमेंशस एंड प्रैक्टिस. संपादन में जे. ए. बैक्स और सी. ए. एम. बैक्स. *हैंडबुक ऑफ़ रिसर्च ऑन मल्टीकल्चरल एजुकेशन* (सेकंड एडिशन). पृष्ठ 3–30. सी. एस. विलेय एंड संस, सेन फ्रांसिस्को.

बैंक्स. जे. और सी. मैकेंगी बैंक्स. 2010. *मल्टीकल्चरल एजुकेशन— इश्यूज़ एंड पर्सपेक्टिव* (सेवेंथ एडिशन). जोहन विली एंड सेंस, यू.एस.ए.

बैपटिस्ट, एच. और एम. बैपटिस्ट. 1980. कंपीटेंसिस टूवार्ड मल्टीकल्चरलिज़्म. संपादन में एच. बैपटिस्ट, एम. बैपटिस्ट, और डी. गोलनिक. *मल्टीकल्चरल टीचर एजुकेशन— प्रिपेयरिंग टीचर एजुकेटर टू प्रोवाइड एजुकेशनल इक्विटी* (वॉल्यूम 1). अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ कोलेजेस फ़ॉर टीचर एजुकेशन, वाशिंगटन. डी. सी.

यू.एस. सेंसस ब्यूरो. 1980. *स्टैटिस्टिकल एबस्ट्रैक्ट ऑफ़ द यूनाइटेड स्टेट्स*. वाशिंगटन डी. सी., ऑथर.

———. 2010. *स्टैटिस्टिकल एबस्ट्रैक्ट ऑफ़ द यूनाइटेड स्टेट्स*. वाशिंगटन डी. सी., ऑथर.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.


© NCERT not to be republished